Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

ज्योतिषशास्त्र में वृष्टि और कृषि विज्ञान

डॉ. निर्भय कुमार पाण्डेय
सहायक प्राचार्य (ज्योतिष), रामाधीन मिश्र भास्करोदय संस्कृत महाविद्यालय,
देवढिया, बक्सर (अंगीभूत इकाई), का.सिं.द.सं. विश्वविद्यलाय, दरभंगा, बिहार

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 115-120

Publication Issue :
September-October-2022

Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 15 Sep 2022

शोधसारांश – भारतीय ज्योतिषशास्त्र में वृष्टि अनावृष्टि का पूर्वानुमान ग्रहगति एवं वायुगति तथा विशिष्ट समयों में आकाश लक्षण के आधार पर की जाती रही है। उसी को आधार बनाकर आज भी वृष्टि का वर्षों पहले अनुमान लगाया जा सकता है। वर्षा के पूर्वानुमान की अनेक विधियाँ ज्योतिषशास्त्र एवं पुराणों में वर्णित हैं। वृष्टि के सन्दर्भ में सर्वविदित तथ्य है कि सूर्य रश्मियाँ वाष्प रूप में जल का संग्रह कर मेघ के रूप में परिवर्तित कर समयानुसार वृष्टि करती है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र की यह विशेषता है कि ग्रहगति के आधार पर वर्षों पूर्व वृष्टि का पूर्वानुमान कर सकता है। करता भी है। पञ्चाङ्ग इसके साक्षी है।

मुख्यशब्द– ज्योतिष, वृष्टि, कृषि, मेघ, चन्द्रमा, सौरमण्डल, पृथ्वी।

सौरमण्डल में उपस्थित समस्त ग्रहों तथा उपग्रहों में एकमात्र पृथ्वी ही ऐसी है जिस पर जीव उपस्थित है। इसका एकमात्र कारण पृथ्वी की जलवायु है। पृथ्वी पर रहने वाले समस्त चराचर जगत् के कारणभूत् इस जलवायु का सबसे प्रमुख घटक है ''जल''। हमारी पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग जलप्लावित है तथा शेष भाग ही स्थल के रूप में दृश्यमान है। पृथ्वी पर इतनी अधिक मात्रा में जल उपस्थित होने पर भी उपयोगी जल की मात्रा अत्यन्त कम है, यह एक बिडम्बना ही है। प्राणियों के लिए उपयोगी जल का प्रमुख स्रोत है वर्षा। वर्षा किस प्रकार ग्रहों से प्रभावित होती है तथा ज्योतिषशास्त्र में किस आधार पर वर्षा का ज्ञान किया जाता है, यह जानने के लिए वृष्टि का क्रम जान लेना आवश्यक है। हमारे सौरमण्डल का सबसे प्रमुख ग्रह सूर्य है, इसी के प्रभाव व प्रकाश से पृथ्वी पर जीवन सम्भव हुआ है। यही सूर्य वृष्टि का भी सबसे प्रमुख कारक है। क्योंकि सूर्य के ताप से ही नदियों व सागरों का जल वाष्पित होकर हवाओं के माध्यम से आकाश में जाता है तथा घनीभूत होकर वर्षा की बूंदों के रूप में पुनः पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण पतित होता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वृष्टि का कारक सूर्य है और यह सूर्य ज्योतिषशास्त्र का भी सबसे प्रमुख ग्रह है। यही कारण है कि हमारे आचार्यों ने वृष्टि का सम्बन्ध ग्रहादि से होने से वृष्टि के कारकों तथा वृष्टि कारक ग्रहों की उपस्थिति व स्थिति के संयोग से वर्षा के पूर्वानुमान तथा मात्रा का विस्तृत विवेचन अपने ग्रन्थों में किया है।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र के ग्रन्थों में वृष्टिकाल तथा मात्रा का विवेचन मेघों के गर्भधारण से ही प्रारम्भ हो जाता है। सूर्य जब कर्क और सिंह राशियों पर होता है तो वर्षा ऋतु होती है। इस काल में उत्पन्न मेघों के द्वारा गर्भधारण व वर्षा का ज्ञान होता है। गर्भधारण के विषय में गर्गादि आचार्यों का मत है

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मार्गशिरः सित्पक्षप्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरेऽषाढाम्।
पूर्वा वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम्।।[1]

अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा से जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में स्थित हो उसी समय से गर्भों का लक्षण जानना चाहिए। परन्तु कुछ आचार्यों का मत है कि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के बाद गर्भ के दिन होते हैं। जैसा कि कहा भी है–

केचिद्वदन्ति कार्त्तिकशुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः।
न च तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये।।[2]

आचार्यों ने गर्भकालिक मेघों के वर्ण तथा उनकी स्थिति और वायु के प्रभाववश वृष्टि का अनुपात तथा गर्भकालिक मेघों के लक्षणों का विशद वर्णन किया है, जैसे–

मुक्तारजतनिकाशास्तमलनीलोत्पलाञ्जनाभासः।
जलचरसत्त्वाकारा गर्भेषु घनाः प्रभूतजलाः।।
तीव्रदिवाकरकिरणभिताषिता मन्दमारुता जलदाः।
रुषिता इव धाराभिर्विसृजन्त्यम्भः प्रसवकाले।।[3]

अर्थात् मोती या चाँदी के समान श्वेत अथवा तमाल वृक्ष, नीलकमल या अञ्जन के समान अतिकृष्ण अथवा जलचर जीव के समान कान्तिवाले गर्भकालिक मेघ हों तो अत्यन्त वृष्टि करने वाले होते हैं। इसी प्रकार अतिभयंकर सूर्य किरण से तप्त, अल्प वायु से युत गर्भकालिक मेष प्रसवकाल में रुष्ट की तरह होकर धाराप्रवाह अतिवृष्टि करते हैं। समास संहिता में भी इस आशय के वचन प्राप्त होते हैं। यथा–

पृथुधनबहुला जलदा जलचरसत्त्वान्विताः शुभा गर्भाः।
स्निग्धसितबहुलपरिवेषपरिवृत्तौ हिमकरोष्णकरौ।।[4]

मेघों के द्वारा गर्भधारण के सम्बन्ध में आचार्य वाराहमिहिर का मत है–

ज्यैष्ठसितेष्टम्याद्याश्चत्वारो वायुधारणा दिवसाः।
मृदुशुभपवनाः शस्ताः स्निग्धघनस्थगितगगनाश्च।।[5]

अर्थात् ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से चार दिन तक गर्भधारण के दिन होते हैं। इन दिनों में सुखस्पर्श, शुभ (उतर, ईशान या पूर्वदिशा में उत्पन्न) वायु, निर्मल मेघयुत आकाश शुभ होते हैं।

इस प्रकार प्राचीन आचार्यों ने मेघों के गर्भधारण अर्थात् वृष्टि के योग्य बादलों के निर्माण का काल जानने का अनेक प्रकार से प्रयास किया है। इसके उपरान्त मेघों के गर्भकालिक समय तथा अन्य ग्रह–नक्षत्रों के योग से वर्षा का प्रमाण तथा अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि का ज्ञान भी किया है। वर्षा का प्रमाण नक्षत्रों के अनुसार आचार्य बाराह मिहिर ने निम्न प्रकार से कहा है–

हस्ताप्यसौम्यचित्रापौष्णधनिष्ठासु षोडशद्रोणाः।
शतभिषगैन्द्रस्वातिषु चत्वारः कृत्तिकासु दश।।
श्रवणे मधानुराधाभरणीमूलेषु दश चतुर्युक्ताः।
फल्गुन्यां पञ्चकृतिः पुनर्वसौ विंशतिद्रोणाः।।

---

[1].बृहत्संहिता, गर्भलक्षणाध्याय, श्लोक 6
[2].बृहत्संहिता, गर्भलक्षणाध्याय, श्लोक 5
[3].तत्रैय, श्लोक 23, 24
[4].तत्रैय (समास संहिता) 2
[5].बृहत्संहिता, गर्भलक्षणाध्याय, श्लोक 1

ऐन्द्राग्न्याख्ये वैश्वे च विंशतिः सार्पभे दश त्र्यधिकाः।
आर्हिर्बुध्न्यार्यम्णप्राजापत्येषु पञ्चकृतिः।।
पञ्चदशाजे पुष्ये च कीर्त्तिता वाजिभे दश द्वौ च।
रौद्रेऽष्टादश कथिता द्रोणा निरुपद्रवेष्वेते।।[6]

आचार्य के द्वारा बतलाए गए नक्षत्रों में वर्षा के इस प्रमाण को निम्न कोष्ठक द्वारा सुगमता से समझा जासकता है–

नक्षत्र	प्रवर्षण काल	प्रवर्षणकाल में मान
हस्त, पू.षा., मृ., चित्रा, रेवती, धनिष्ठा	यदि वर्षा हो	16 द्रोण
शत., ज्येष्ठा, स्वाती	यदि वर्षा हो	4 द्रोण
कृत्तिका	यदि वर्षा हो	10 द्रोण
श्रवण, मघा, अनु., भरणी, मूल	यदि वर्षा हो	14द्रोण
पू.फा., उ.फा., उ.भा., रोहिणी	यदि वर्षा हो	25 द्रोण
पुनर्वसु, विशाखा, उ.षा.	यदि वर्षा हो	20 द्रोण
पू.भा., पुष्य	यदि वर्षा हो	15 द्रोण
अश्विनी	यदि वर्षा हो	12 द्रोण
आर्द्रा	यदि वर्षा हो	18 द्रोण

परन्तु वर्षा का उक्त प्रमाण तभी प्राप्त होता है जब ये नक्षत्र उपद्रवग्रस्त न हों। यदि ये नक्षत्र सूर्य, शनि, केतु तथा भौम अथवा त्रिविध उत्पातों (दिव्य, अन्तरिक्ष, भौम) से पिड़ित हों तो अमङ्गल और वृष्टि का अभाव अथवा मात्रा में कमी हो जाती है। जैसा कि वराह ने कहा भी है–

रविरविसुतकेतुपीडिते भे क्षितितनयत्रिविधाद्भुताहते च।
भवति च न शिवं च चापि वृष्टिः शुभसहिते निरुपद्रवे शिवं च।।[7]

इस प्रकार अनेकों तरह से वशिष्ठ, काश्यप, वाराह आदि आचार्यों ने वृष्टि के लक्षण तथा वृष्टि कारक ग्रह योगों का वर्णन अपने–अपने ग्रन्थों में किया है। इसी क्रम में सद्यः वर्षण का भी पर्याप्त अन्वेषण तथा अध्ययन व मनन ज्योतिष ग्रन्थों में प्राप्त होता है। जैसे सूर्य के किरणों से वर्षा का ज्ञान करते हुए आचार्य वराह ने लिखा है– वर्षाकाल में उदयाचल पर स्थित, अत्यन्त तीक्ष्ण किरणों से युत, गलित सुवर्ण के समान वर्ण, तथा निर्मल वैदुर्य मणिके कान्ति सदृश सूर्य जिस दिन दिखे उसी दिन वृष्टि करता है। इसी प्रकार मध्याह्न काल में अति तीक्ष्ण किरणों से युत् सूर्य हो तो भी उसी दिन वर्षा होती है–

उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्ष्योऽतिदिप्त्या
द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः।
तदहनि कुरुतेऽम्भस्तोयकाले विवस्वान्।।
प्रतपति यदि चोच्चैः खं गतोऽतीव तीक्ष्णम्।।[8]

[6].बृहत्संहिता, प्रवर्षणाध्याय, श्लोक 6, 7, 8, 9
[7].तत्रैव, श्लोक 10

अन्यत्र भी सूर्य की स्थिति से वर्षा का प्रमाण बताते हुए लिखा है–

अग्रतः पृष्ठते वाऽपि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः।
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव।।[9]

अर्थात् यदि सूर्य से मन्दगति ग्रह आगे तथा शीघ्रगति ग्रह पीछे हो तो पृथ्वी को समुद्र की तरह कर देते हैं, अर्थात् अत्यधिक वृष्टि होती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हमारे प्राचीन आचार्यों ने ग्रह–नक्षत्रादिकों के द्वारा वृष्टि का ज्ञान करने का एक अद्भुत सूत्र खोज निकाला था। आज भी भारतीय पचाङ्गों में वर्षपर्यन्त होने वाली वर्षा का प्रमाण तथा वर्षा का समय लिखा होता है साथ ही यह अत्यन्त विस्मयकारक परन्तु सत्य है कि आधुनिक मौसम विज्ञान द्वारा वृष्टि के बारे में किए गए भविष्यवाणियों से ज्योतिषशास्त्र की वृष्टि सम्बन्धी भविष्यवाणियों के सत्य होने का प्रतिशत अधिक है। अतः हमें गर्व है अपने उन आचार्यों पर जिन्होंने इस प्रकार का श्लाघनीय व महनीय प्रयास किया तथा हमें एक अद्भुत शास्त्र प्रदान किया।

भारतीय समाज में कृषि (खेती) करने की परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है कृषि का तादात्म्य वृष्टि से है जो–

ऊर्क्कचमे सुनृता चमे–कृषिश्च्चमे वृष्टिश्चमे।। (शु.यजु., 18/9)

वेदों में भी कृषि को कैसे किया जाय यह बताया गया है। अथर्ववेद में कृषि सूक्त का वर्णन है जिसमें कृषि करने की व्यवस्था एवं उपकरणों का स्वरूप मन्त्रों द्वार ज्ञात होता है। यह सम्पूर्ण जगत् दैवाधीन है। यथा–''दैवाधीनं जगत् सर्वम्।'' सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए दैवी आराधना करना परमावश्यक है जो यज्ञ–यज्ञादि से सम्भव है, यज्ञ हेतु अन्न (तिल, गेहूँ, धान) आदि की आवश्यकता होती है अतः कृषि मानव जीवन में परमोपयोगी है। अथर्ववेद के मन्त्रों के द्वारा कृषि विज्ञान –

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नयौ।। अथर्ववेद 3/17/11

इस मन्त्र में हल द्वारा भूमि को सही प्रकार से जोतें जिससे भूमि पर लकीर बन जाय और उसी लकीर में बीज डालना चाहिए तथा बैलों के पीछे–पीछे किसान को सम्भलकर चलना चाहिए इत्यादि सभी कृषि व्यवस्था का वर्णन मिलता है इतना ही नहीं कृषि उपकरण हल आदि का भी स्वरूप वर्णित है। जैसे–

युनक्तसीरा बीयुजा तनोत कृत्ते थोनौ व पतेहबीजम्।
विराजः रन्डष्टि सभरा असन्नो नेदीय इत्सृव्यः पक्वमा यवन्।।

कृषक जूओं को फैलाकर हल से जोड़ों और खेतों को सही प्रकार से जोतकर अच्छी भूमि तैयार करके उत्तम बीज का वपन करें, हलों में लोहे का फाल लगा हो पकड़ने के लिए लकड़ी की मूठी हो जिससे हल प्रवहण काल में किसानों को कष्टानुभव न हो, सुखपूर्वक हल चला सकें। जैसा कि–

लाङ्गलं पवीरवत्सुमीमं सोमसत्सरु.....।।

इन मन्त्रों द्वारा कृषि करने को जिस पद्धति का निर्देश किया गया वह पद्धति वैदिकी है कृषक कृषि हेतु मन्त्रों के द्वारा उत्तम बीज, वृष्टि आदि की याचना करते हैं क्योंकि संसारका प्राण अन्न है–

अन्नाद्भवन्तिभूतानि पर्जन्याद्अन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भावति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः। गीता ३/१४

---

[8].बृहत्संहिता, प्रवर्षणाध्याय, श्लोक 31
[9].तत्रैव, श्लोक 22

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं तथा अन्न की उत्पत्तिवृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। ज्योतिषाशास्त्र में कृषि विज्ञान का ज्ञान विशद् रूप में उद्भुत है अतः वर्णित तथ्यों (मुहूर्तों) को ध्यान में रखते हुए ही हल चलाना तथा खेतों में बीज का बोना उत्तम होता है क्योंकि ये सभी मुहूर्त ऋतुओं को ध्यान में रखते हुए बनाए गये है जिससे कोई दैवी आपदा के द्वारा फसल नष्ट न हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार गर्ग, पराशर, कस्यपादि ऋषियों के अनुसार मेघ गर्भधारण करता है और फिर उस गर्भ का प्रसव होता है।

सितपक्षः यवाः कृष्णे शुक्रेकृष्णाद्युसम्भवा रात्री।
नक्तं प्रभवाश्चाद्यानि सन्ध्याजातश्च सन्ध्यायाम्।। गर्मल.अ. 8।

यदि गर्भ शुक्लपक्ष में हो तो कृष्णपक्ष में प्रसव होता है तथा दिन का रात्रि में और रात्रि का दिन में कालान्तर से गर्भ का प्रसव क्रम है।

ज्येष्ठासितेऽष्टम्याद्याश्चात्वारो वायुधारणा दिवसाः। गर्भधा.अ. 1।

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से चार दिन गर्भधारण के होते हैं। इसी प्रकार ऋषियों द्वारा प्रतिपादित गर्भलक्षण तथा गर्भाय का ध्यान रखकर खेती की जाय तो अवश्य ही उत्तम खेती होगी।

आज के विज्ञान के चरमोत्कर्ष युग में भी प्रायः किसान ज्योतिष के अनुसार ही खेती करते हैं। इस पद्धति के द्वारा धान की खेती करने वाला किसान पान की खेती प्रारम्भ करता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार केसर से लेकर ईख इत्यादि सभी प्रकार के खेती कब और कैसे तथा किस समय किया जाय ये सभी ज्ञान उपलब्ध है। मानव जीवन कोसुखी बनाने हेतु ज्योतिषीय विज्ञान द्वारा खेती करना श्रेयस्कर होगा।

आधुनिक विज्ञान ने कृषि को अनेक दृश्यों में पर्याप्त विकसित किया है फिर भी अहर्निश प्रयत्नशील है वृष्टि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने पर्याप्त प्रगति की है, किन्तु सद्यो वृष्टि की ही सूचना आधुनिक विज्ञान से प्राप्त हो पाती है, जो कृषि की दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। वृष्टि की यदि पूर्व सूचना रहती है तो कृषि कर्म को व्यवस्थित करने हेतु अवस मिल जाता है। केवल 24–26 घण्टों की पूर्व सूचना कृषक के लिए उपादेय नहींहो पाती है। वृष्टि की पूर्व सूचना अथवा वार्षिक वृष्टि की रूप रेखा यदि वर्ष के आरम्भ में ज्ञात हो जाय तो उसी के अनुसार कृषि की योजना अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। इसीलिए तो पाराशर ने पर्याप्त बल देकर कहा कि–

वृष्टिमूला कृषिः सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्।।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में वृष्टि अनावृष्टि का पूर्वानुमान ग्रहगति एवं वायुगति तथा विशिष्ट समयों में आकाश लक्षण के आधार पर की जाती रही है। उसी को आधार बनाकर आज भी वृष्टि का वर्षों पहले अनुमान लगाया जा सकता है। वर्षा के पूर्वानुमान की अनेक विधियाँ ज्योतिषशास्त्र एवं पुराणों में वर्णित हैं। वृष्टि के सन्दर्भ में सर्वविदित तथ्य है कि सूर्य रश्मियाँ वाष्प रूप में जल का संग्रह कर मेघ के रूप में परिवर्तित कर समयानुसार वृष्टि करती है। भगवान व्यास की दृष्टि में केवल सूर्य रश्मियाँ ही वृष्टि सर्जक नहीं अपितु चन्द्रमा और वायु की भी प्रमुख भूमिका होती है।

वायुपुराण में महर्षि व्यास ने वृष्टि का कारण स्पष्ट करते हुए लिखा है–

आदित्यपीतं सूर्याग्नेः सोमं संक्रमते जलम्।
नाडीभिर्वायुयुक्ताभिर्लोकाधानं प्रवर्तते।।

यत् सोमात् स्त्रवते सूर्यं तदभ्रेष्ववतिष्ठते।
मेघा वायुनिघातेन विसृजन्ति जलं भुवि।।

(वायुपु. 1/51/14/15)

भारतीय ज्योतिषशास्त्र की यह विशेषता है कि ग्रहगति के आधार पर वर्षों पूर्व वृष्टि का पूर्वानुमान कर सकता है। करता भी है। पञ्चाङ्ग इसके साक्षी है।

सन्दर्भग्रन्थाः

1. बहद्वास्तुमाला
2. बृहज्जातकम्
3. बृहत्संहिता
4. मनुस्मृतिः
5. मुहूर्तमाधवीयम्